International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(4): 87-90

International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 87-90
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-04-2022
Accepted: 15-05-2022

तारा बाई मीना
संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नहरू विश्व विद्यालय, न्यू दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
तारा बाई मीना
संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नहरू विश्व विद्यालय, न्यू दिल्ली, भारत

अग्नि पुराण में वर्णित आयुर्वेद विषयक अवधारणा

तारा बाई मीना

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत वाङ्मय का योगदान सर्वविदित है, बिना संस्कृत वाङ्मय के भारतीयता अथवा भारतीय ज्ञान की कल्पना ही असंभव है। संस्कृत वाङ्मय को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। वैदिक साहित्य एवं लौकिक साहित्य। वैदिक साहित्य में चारो वेद उपवेद उपनिषद ग्रंथ अंतर्भूत होते हैं। वेदों में ही सभी विद्याओं का आधार दृष्टिगोचर होता है। वेदों की अवगति के लिए चार उपवेद रचे गए जिनमें ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धर्ववेद व अथर्ववेद का अर्थवेद उपवेद है। यद्यपि कुछ विद्वानों में आयुर्वेद को ऋग्वेद व अथर्ववेद का उपवेद मानने में मतैक्य नहीं है, तथापि आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद स्वीकारा जाता है।

आज के इस युग में भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता तो स्वतः सिद्ध ही है तथापि विश्वस्वास्थ्य संगठन ने एक बार फिर इस आयुर्वेदीय ज्ञान की परंपरा को कुछ पुष्ट कर दिया है। इस तरह की वैश्विक महामारियों में आयुर्वेद में वर्णित सिद्धांतों को आधार मानकर व उस ज्ञान का अनुसरण करके ही विजय हासिल की जा सकती है। वस्तुतः आयुर्वेद कहते किसे है ? सुश्रुत संहिता में कहा गया है कि- व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वास्थ्यस्य स्वास्थ्यरक्षणं च आयुर्वेद।[1]सुश्रुत ने ही आयुर्वेद का निर्वचन इस तरह किया है - आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वा आयुर्विन्दति अर्थात इसमें आयु का वर्धन अथवा आयु जिससे बढे वह आयुर्वेद है। आयुर्वेद के प्रमुख आठ सिद्धांत वर्णित है -
१ शल्य २ शालाक्य ३ कायचिकित्सा ४ भूतविद्या ५ कौमारभृत्य ६ अंगदतंत्र ७ रसायनतंत्र ८ वाजीकरण ये आठ सिद्धांत प्रमुखतया आयुर्वेद में वर्णित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में सभी प्रकार के साहित्यों में उन आठ अंगों का यत्र- तत्र वर्णन हमें प्राप्त होता है। वेदों के पश्चात् प्रणीत पुराण साहित्य में भी आयुर्वेद के इन सिद्धांतों का वर्णन हमें प्राप्त होता है।

पुराण साहित्य के माध्यम से तथा कहानी कथाओं के माध्यम से आयुर्वेद का ज्ञान लोगों तक पहुंचाना ऋषियों को अपेक्षित था। कोई भी ज्ञान दो रूपों में जन-जन तक पहुंचाया जाता है। प्रथम सिद्धांतों के रूप में जैसे वेद हैं , द्वितीय कथाओं के माध्यम से उन्हीं सिद्धांतों को सरलतया व सरसतया से जनसाधारण तक पहुंचाया जाता है जो कि पुराणों की शैली है। इसी शैली को जनसाधारण ने स्वीकार किया है।

प्रायशः सभी पुराणों में आयुर्वेद विषयक सिद्धांत कथानको के माध्यम से प्रस्तुत है तथापि अग्नि पुराण विश्वकोश होने के कारण सभी विद्याओं का आकार होने से तथा सभी विद्याओं के उत्स के रूप में प्रख्यात होने से इसमें आयुर्वेद के अनेक प्रकार व सिद्धांत निदर्शित हुए हैं । हम प्रायशः मानवायुर्वेद को ही जानते हैं, अग्नि पुराण में वृक्षायुर्वेद हस्त्यायुर्वेद गवायुर्वेद इत्यादि अनेक प्रकार के आयुर्वेद वर्णित है जो कि कथाओं के माध्यम से वर्णित हैं तथा अद्यावधि प्रासंगिक है तथा आगे भी रहेंगे । प्रस्तुत शोध पत्र में उन सिद्धांतों का निदर्शन मात्र होगा जो अग्नि पुराण में आयुर्वेद से संबंधित हैं ।

अग्नि पुराण में 279 वे अध्याय से 293 अध्याय तक विभिन्न औषधो का वर्णन व आयुर्वेद का वर्णन मिलता है। 279 वे अध्याय में सिद्ध औषधो का निरूपण किया गया है । अग्नि कहते हैं –

आयुर्वेदं प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत ।
देवो धन्वन्तरिः सारं मृत सञ्जीवनीकरम् ।। [2]

अग्नि वशिष्ट जी से कहते हैं कि अब मैं उस आयुर्वेद का वर्णन कर रहा हूं जिसको भगवान धन्वन्तरी ने सुश्रुत को उपदेश दिया था । यह आयुर्वेद का सार है और मृत्यु पुरुष को को भी जीवित बना देता है । सुश्रुत ऊवाच-

आयुर्वेदं मम ब्रूहि नराश्वेभरुर्गदनम् ।
सिद्धयोगान् सिद्धमन्त्रान् मृतसञ्जीवनीकरान् ।। [3]

सुश्रुत धन्वन्तरी से कहते हैं कि आप मुझे मनुष्य घोड़े तथा हाथी के रोगों को दूर करने वाले आयुर्वेद के विषय में बताइए । धन्वन्तरी ऊवाच-

रक्षन् बलं हि ज्वरितं लङ्गितं भोज्येदभिषक् ।
सविश्वं लाजमण्डन्तु तृड्ज्वरान्तं श्रृतं जलम् ।। [4]

अर्थात धन्वन्तरी कहते हैं कि वैद्य को चाहिए कि वह ज्वराक्रांत व्यक्ति के बल पर ध्यान देते हुए उपवास कराएं । सोंठ से युक्त धान के लावा का मांड नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खश्, चंदनसुगंधबाला और सोंठ के साथ (अर्धपक्व) जल प्यास एवं ज्वर की शांति के लिए छह दिनों के व्यतीत हो जाने पर चिरायते जैसे कड़वे काढे का रोगी को पान करावे-

मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरै ।
षडहे च व्यतिक्रान्ते तिक्तकं पाययेद् ध्रुवम् ।।
तद्विधास्ते ज्वरेष्विष्टा यवानां विकृतिस्तथा ।
मुद्गा मसूराश्चणकाः कुलत्थाश्च सकुष्ठकाः ।। [5]

इस पद्य में यह बताया गया है कि ज्वराकांत व्यक्ति को क्या-क्या खिलाना उचित है । यव के बने पदार्थ मूंग, मसूर, चना, कुलत्थी, सोंठ, अरहर, उत्तम छिलके के फल व अनार पथ्य व हितकारी होते हैं । अब अतिसार रोग में क्या पथ्य है इस बात का वर्णन करते हैं –

साधिता घृतदुग्धाभ्यां क्षौद्रं वृषरसो मधु ।
अतीसारे पुराणानां शालीनां भक्षणं हितम् ।। [6]

अर्थात अतिसार में घी एवं दूध से बनाए गए गेहूं के पदार्थ (दलिया) आदि हितकारक होते हैं । बलवर्धक रस व छोटी मक्खी का शहद भी हितकारी होता है तथा पुराना अगहनी का धान भी पथ्य होता है । इस तरह के आयुर्वेदोक्त ज्ञान ही परंपरा से आज तक गृहिणीयों को ज्ञात है व वे इसका अनुप्रयोग भी करती हैं ।

इस तरह से इस अध्याय में विभिन्न रोगों की सिद्ध औषधियों का वर्णन किया गया है जो कि वर्तमान समय में तो और भी प्रासंगिक सिद्ध हो रहा है । अगले अध्याय में सर्वरोग हारिणी औषधियों का वर्णन करते हुए पहले रोगों के प्रकार बतातेहैं –

शारीरमानसागन्तु सहजा व्याध्यो मता ।
शारीरा ज्वरकुष्ठाद्याः क्रोधाद्याः मानसा मताः ।।
आगन्तवो विद्यातोत्था सहजाः क्षुज्जरादयः ।
शारीरागन्तुनाशाय सूर्य्यवारे घृतं गुडम् ।। [7]

इन पद्यो में बताया गया है कि चार प्रकार की बीमारियां होती है - १ शारीरिक २ मानसिक ३ आगंतुक ४सहज । शारीर व्याधि - कुष्ठ ज्वरादि हैं, क्रोध आदि मानस व्याधियां है, चोट आदि से होने वाले रोग आगंतुक व बुढ़ापा आदि सहज है । इन चारों प्रकार की व्याधियों के शमन के लिए यहां अनेक औषध वर्णित है । वात पित्त व कफ प्रधान स्थान को बताते हुए कहते हैं कि –

वातश्लेष्मातको देशो बहुवृक्षो बहूदकः ।
अनूप इति विख्यातो जाङ्गलस्तद् विवर्जितः ।।
किञ्चितद्वृक्षोदकोदेवस्तथा साधारणः स्मृतः ।
जाङ्गलः पित्तबहुलो मध्यः साधारणः स्मृतः ।।
रुक्षः शीतश्चलो वायुः पित्रमुष्णं कदुत्रयम् ।
स्थिराम्लस्निग्धमधुरं बलशश्च प्रचक्षते ।।[8]

अर्थात बहुत वृक्ष तथा अधिक जल वाला देश अनूप कहलाता है यह वात एवं कफ उत्पन्न करने वाला होता है जांगल देश अनूप देश की गुण व प्रभाव से रहित होता है । थोडे वृक्ष व थोडे जल वाला देश कम पित्त उत्पन्न करता है तथा साधारण कहलाता है । जंगल देश अधिक पित्त वाला तथा साधारण देश मध्यम पित्त वाला होता है । इन तीनों गुणों की सममात्रा ही स्वास्थ्य का कारण बनता है । इन्हीं गुणों को समस्थिति में रखने के पूर्व सावधानियां व वातावरण को साथ रखते हुए बताया गया है । इससे अग्रिम अध्याय में रसों के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया हैं। षड्रसों में कौन ऊष्ण कौन शीत व कौन सामान्य है यह बताया गया है ।

अग्नि पुराण में मानव के हितकारी आयुर्वेद के अतिरिक्त वृक्ष, गौ, अश्व, गज आदि के रोगों व उनके निदानों का स्वरूप हमें दिखाई देता है । जिसमें सर्वप्रथम वृक्षायुर्वेद का स्वरूप व उनके रोग व शमन बताते हैं ।

वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षश्चोत्तरतः शुभः ।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्र आप्येऽश्वत्थः क्रमेण तु ।। [9]

धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते हैं कि, अब मैं वृक्षायुर्वेद को बतलाता हूं , गृह के उत्तर में पाकड़ का पेड़ शुभ होता है । पूर्व में वट, दक्षिण में आम और पश्चिमी दिशा में पीपल का शुभ माना जाता है ।

विफलाः स्युर्घनाः वृक्षाः शस्त्रेणादौ हि शोधनम् ।
विडङ्गघृतपङ्काक्तान् सेचयेच्छीतवारिणा ।।
फलनाशे कुलत्थैश्च माषैर्मुद्गैर्यवैईस्तिलैः ।
घृतशीतपयः सेकः फलपुष्पाय सर्वदा ।। [10]

अर्थात जब वृक्षों पर फल ना आवे तो वृक्ष यदि घना है तो उसको काट छांट कर कम करना चाहिए इसके पश्चात वायविड्ङ्ग, घी तथा पंकमिश्रित शीतल जल से उनको सीचते रहना चाहिए । वृक्षों में फल नहीं लगने पर लगने पर उसमें कुलत्थी, उड़द, मूंग, यव, तिल तथा घृत मिश्रित शीतल जल के सेचन से सदा फल आते रहेंगे । श्लोक इसके पश्चात् मंत्रौषधि का वर्णन भी किया गया है जिसे आजकल (साउंड थेरेपी) कहाजाता है ।

आयुरारोग्यकर्तार ओकाराद्याश्च नाकदा ।
ओंकारः परमोमन्त्रस्तं जप्त्वा चामरो भवेत् ।।
गायत्री परमोमन्त्रस्तं जप्त्वा भुक्ति मुक्ति वाक् ।
ओं नमो नारायणाय मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ।। [11]

अर्थात् ओंकरादि आयु आरोग्य व सुख को प्रदान करने वाले हैं ओंकार परम मंत्र है व उसके जाप से व्यक्ति अमर व रोग रहित हो जाता है । गायत्री मंत्र भी परम मंत्र है जिसके जाप से व्यक्ति भोगयोनि से मुक्ति पा लेता है । इस प्रकार प्राचीन काल में जब कोई व्यक्ति मानसिक व्याधियों से ग्रस्त होता था तो उसे इन ओंकार गायत्री आदि का जाप करके व्याधि शमन किया जाता था । आज के इस विज्ञान के तथाकथित इस युग में अब लोग इस मंत्र जाप (मंत्र थेरेपी) की ओर अग्रसर हो रहे हैं । अग्नि पुराण में ही मनुष्य को आयु बढ़ाने वाले औषधों का वर्णन प्राप्त होता है –

कल्पान्मृत्युञ्जयान्वक्ष्येह्यायुर्दान्रोगमर्दनान् ।
त्रिशतीरोगहासव्यामध्वाज्यत्रिफलामृता ।।
परंपलार्द्धकर्षवात्रिफलांसकलांतथा ।
बिल्वतैलस्यनस्यञ्चमासंपञ्चशतीकविः ।। [12]

धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते हैं -कि अब मैं मृत्युञ्जय कल्पों का वर्णन करता हूं जो आयु देने वाले तथा सभी प्रकार के रोगों का मर्दन करने वाले हैं । तीन सौ वर्ष की आयु देने वाली मधु, घी, त्रिफला तथा गिलोय का सेवन करना चाहिए । चार तोले, दो तोले अथवा एक तोले की मात्रा में प्रतिदिन त्रिफला के सेवन से भी वही फल देता है । एक मास तक बिल्व तैल का नस्य लेने से पांच सौ वर्ष की आयु व कवित्व शक्ति प्राप्त होती है । वस्तुतः ये उक्त कथन शोध के विषय है जो कि प्रायोगिक पक्ष को आधार मानकर किए जा सकते हैं।

इसी प्रकार अग्रिम अध्यायों में हस्त्यायुर्वेद, अश्व आयुर्वेद व गवायुर्वेद का वर्णन किया गया है । जिसमें हस्ति, अश्व व गौ के लक्षण व उत्तमता, रोग व रोग शमन वर्णित हैं । यहां गायों को श्रेष्ठ माना गया है तथा उनका पालन मानवों का धर्म बताया गया है ।

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम् ।
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।।
गावः पवित्रं परमं गावो माङ्गल्यमुत्तमम् ।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः ।। [13]

अर्थात गायों का पालन करना गायों का रक्षण सुखकर व मंगलप्रद होता है । गाये स्वर्ग का सोपान है तथा सभी प्राणीयों की प्रतिष्ठा है । इस प्रकार अग्नि पुराण के अवलोकन से हमें अनेक प्रकार की विद्याओं का ज्ञान होता है। अग्नि पुराण तो सभी भारतीय विद्याओं का कोषग्रंथ है। अग्नि पुराण में वर्णित आयुर्वेद के इन स्वरूपों का वर्तमान संदर्भ में भी प्रसांगिकत्व यथावत है तथा आगे भी रहेगा । इस तरह के विषयों का अध्ययन यदि आज तक मेडिकल साइंस के साथ किया जाये तो निश्चित रूप से असाध्य व्यक्तियों का समाधान प्राप्त हो सकता है

संदर्भसूची

1. सुश्रुत संहिता १/१२
2. अग्नि पुराण २७९/१
3. अग्नि पुराण २७९/२
4. अग्नि पुराण २७९/३
5. अग्नि पुराण २७९/ ४,६
6. अग्नि पुराण २७९/१०
7. अग्नि पुराण २८०/ १,२
8. अग्नि पुराण २८०/ १५,१६,१७
9. अग्नि पुराण २८२/१
10. अग्नि पुराण २८२/ ९, १०
11. अग्नि पुराण २८४/ १,२
12. अग्नि पुराण २८६/ १,२
13. अग्नि पुराण २९२/ १५, १८